इकाई 3 पाठ्यचर्या विकास*

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 पाठ्यचर्या योजना

3.3.1 पाठ्यचर्या योजना का अर्थ

3.3.2 पाठ्यचर्या योजना के सिद्धांत

3.4 पाठ्यचर्या योजना के उपागम

3.4.1 व्यावहारिक उपागम

3.4.2 प्रबंधकीय उपागम

3.4.3 प्रणाली उपागम

3.4.4 मानवीय उपागम

3.4.5 बौद्धिक/अकादमिक उपागम

3.5 पाठ्यचर्या डिज़ाइन के आयाम

3.6 विभिन्न स्तरों पर पाठ्यचर्या

3.6.1 पूर्व–प्राथमिक

3.6.2 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक (प्रारंभिक)

3.6.3 माध्यमिक

3.6.4 उच्चतर माध्यमिक

3.6.5 उच्च शिक्षा (महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय)

3.7 पाठ्यचर्या विकास के सोपान

3.8 सारांश

3.9 इकाई अंत अभ्यास

3.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

3.11 आप की प्रगति जाँच के उत्तर

3.1 प्रस्तावना

"पाठ्यचर्या" क्या है एवं इसकी आवश्यकता क्यों है? यह पाठ्य–विवरण और पाठ्यचर्या की रूपरेखा से कैसे भिन्न है? ये कुछ प्रश्न हैं और इन प्रश्नों के उत्तरों पर चर्चा पिछली इकाई में की गई है। पाठ्यचर्या निर्माताओं को पाठ्यचर्या के विकास की योजना बनाने के लिए बहुत अधिक प्रयास करने की आवश्यकता होती है। पाठ्यचर्या

* प्रो० उपेन्दर रेड्डी, पूर्व प्रोफेसर, एससीईआरटी, हैदराबाद एवं डॉ० एलिसबेथ कुरुविला, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विकास का अर्थ पाठ्यचर्या की योजना एवं डिज़ाइन, किसी भी देश की नीतियों एवं योजनाओं की रूपरेखा के अन्तर्गत शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार उसके क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया से है। शिक्षा की सभी प्रक्रियाओं के लिए पाठ्यचर्या एक बार नहीं बन सकती है। इसमें शिक्षा के पूर्व–प्राथमिक से उच्च स्तर तक के सभी स्तरों पर समय–समय पर बदलाव होता रहता है। इस इकाई में आप पाठ्यचर्या की योजना के उपागमों एवं सिद्धांतों के बारे में सीखेंगे। आप पाठ्यचर्या के विभिन्न स्तरों जैसे– पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक एवं उच्च (महाविद्यालयी एवं विश्वविद्यालयी) शिक्षा की प्रकृति के बारे में समझेंगे। आप पाठ्यचर्या की डिज़ाइन का महत्व, उसकी प्रक्रिया और उसके शिक्षण–अधिगम पर प्रभाव के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगें। आप पाठ्यचर्या डिज़ाइन के विविध उपागमों पर स्पष्टता प्राप्त करेंगे। इस इकाई में, शिक्षार्थियों की आयु एवं परिपक्वता के अनुसार पाठ्यचर्या में भिन्नता पर भी विस्तार से चर्चा की गई है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात्, आप सक्षम होंगें–

- पाठ्यचर्या की योजना के अर्थ की व्याख्या करने में;
- पाठ्यचर्या की योजना के विभिन्न पहलुओं एवं उसके उपागमों को पहचानने में;
- पाठ्यचर्या की योजना बनाने में विभिन्न उपागमों की भूमिका का परीक्षण करने में;
- पाठ्यचर्या डिज़ाइन के विभिन्न आयामों को समझने में;
- शिक्षार्थियों की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के आधार पर पाठ्यचर्या के विभिन्न स्तरों जैसे– पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक तथा उच्च (महाविद्यालयी एवं विश्वविद्यालयी) शिक्षा में भिन्नता की समझ विकसित करने में, तथा
- पाठ्यचर्या विकास के सोपानों का वर्णन करनें में।

3.3 पाठ्यचर्या योजना

आप जानतें हैं कि पाठ्यचर्या एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है, जो शिक्षार्थियों के समग्र विकास के लिए एक विद्यालय/संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों को दर्शाता है। शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, बौद्धिक एवं नैतिक पहलुओं के संदर्भ में शिक्षार्थियों का विकास मूल रूप से विद्यालय में समय–समय पर आयोजित की जाने वाली गतिविधियों पर निर्भर करता है। ''क्या पढ़ाया जाए''? किसको पढ़ाया जाए''? कैसे पढ़ाया जाए?'' जैसे प्रश्नों पर चर्चा की गई है तथा पाठ्यचर्या की योजना एवं विकास दौरान विचार–विमर्श किया गया। इसी तरह, मूल्य क्या हैं एवं आयु के अनुसार किन दक्षताओं का विकास करने की आवश्यकता है जैसे प्रश्न शिक्षार्थियों में किस ज्ञान, विश्वास और अभिवृत्तियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, पर चर्चा करने की ज़रूरत है तथा पाठ्यचर्या की योजना एवं डिज़ाइन बनाते समय विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय नीतियों एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार यदि पाठ्यचर्या की योजना बनाई जाए तो शिक्षा प्रणाली बहुत प्रभावी हो सकती है। इसके अलावा, शिक्षार्थियों की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दोनों आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सावधानीपूर्वक पाठ्यचर्या की योजना बनाने की आवश्यकता है। पाठ्यचर्या निवेशों से ही शिक्षा की गुणवत्ता निर्धारित होती है, और शिक्षा की गुणवत्ता किसी भी देश के नागरिकों की गुणवत्ता में योगदान देती है।

3.3.1 पाठ्यचर्या योजना का अर्थ

पाठ्यचर्या की योजना गतिविधियों की एक श्रृंखला है, जिसमें देश या समाज की आवश्यकताओं एवं लक्ष्यों के अनुसार पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है। यह एक प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न स्तरों पर प्रतिभागी अधिगम के लक्ष्यों के बारे में निर्णय लेते हैं, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के बारे में निर्णय लेते हैं, जिनके द्वारा इनकी प्राप्ति की जा सके और निर्धारित करते हैं कि अपनाई गई विधियाँ एवं साधन प्रभावी हैं या नहीं। बेहतर अधिगम के लिए ज्ञान और शिक्षण शास्त्रीय अनुसंधान के क्षेत्रों में निरंतर वृद्धि हो रही है। वैश्वीकरण के साथ–साथ मानव संसाधन की आवश्यकताओं के कारण सामाजिक आवश्यकताओं में भी बदलाव आया है। पर्यावरण में तेज़ी से बदलाव वर्तमान और भावी जीवन के लिए बच्चों को तैयार करने के नए तरीकों की मांग करता है। इसलिए पाठ्यचर्या को इन सरोकारों पर प्रतिक्रिया देनी चाहिए तथा समय–समय पर पाठ्यचर्या में बदलाव एवं सुधार की आवश्यकता है। विश्व अर्थव्यवस्था में तेज़ी से बदलाव एवं लोगों की जीवन–शैली में बदलाव; संस्कृति एवं भाशाओं का अंतर्प्रसारण बच्चों को उनके वर्तमान एवं भावी जीवन के लिए तैयार करने में एक नई दिशा की मांग करता है। पाठ्यचर्या नियोजनकर्ताओं को निम्नलिखित प्रासंगिक प्रश्नों का ध्यान रखना चाहिए :–

- देश में शिक्षा के लक्ष्य एवं नीतियाँ क्या है?
- व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में शिक्षार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताएँ क्या हैं?
- विषयवस्तु, कौशल एवं प्रवृत्तियाँ (Dispositions) क्या होनी चाहिए और उन्हें कैसे सीखा जाना चाहिए?
- देश और समाज की आवश्यकताएँ क्या हैं?
- गतिशील समाज में बने रहने के लिए शिक्षार्थियों में किन मूल्यों पर बल दिया जाना है?
- जीवन एवं आजीविका (करियर) में सफलता प्राप्त करने के लिए कौन–से व्यावसायिक एवं पेशेवर कौशल आवश्यक हैं?
- पाठ्यचर्या की योजना बनाते और तैयार करते समय किन मुद्दों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखना चाहिए?

पाठ्यचर्या की योजना एवं डिज़ाइन बनाते समय इन कुछ विशेश प्रश्नों पर ध्यान देना चाहिए। अब, हम नियमित अंतराल पर पाठ्यचर्या नवीनीकरण की आवश्यकता को समझते हैं। आइए हम प्रख्यात पाठ्यचर्या विशेशज्ञों द्वारा बताई गई पाठ्यचर्या की योजना की मुख्य विशेशताओं की जाँच करते हैं।

राल्फ डब्ल्यू. टाइलर (1949) ने चार बुनियादी सवालों को रखा, जिन्हें किसी भी स्तर के लिए पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय ध्यान देने की आवश्यकता है और वे निम्नलिखित हैं:–

- एक शिक्षण संस्थान को कौन–से बुनियादी उद्देश्य प्राप्त करने चाहिए?
- इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए क्या अधिगम अनुभव प्रदान किये जा सकते हैं?
- इन अधिगम अनुभवों को प्रभावी ढंग से कैसे आयोजित किया जा सकता है?
- हम कैसे निर्धारित कर सकते हैं कि ये उद्देश्य प्राप्त हो रहें हैं या नहीं?

हिल्डा टाबा (1962)पाठ्यचर्या विकास के लिए एक आगमनात्मक उपागम का तर्क प्रस्तुत करती है। शिक्षक को शिक्षार्थियों की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपनी स्वयं की पाठ्यचर्या विकसित करनी चाहिए। उन्होंनें कहा कि पाठ्यचर्या का निर्धारण विद्यालय प्रबंधन द्वारा नहीं किया जाएगा, जो एक टॉप–डाउन (ऊपर से थोपा हुआ) उपागम है। वास्तविक हितधारकों का एक समूह अर्थात् शिक्षक, प्राचार्य, शिक्षाविद्, पाठ्यचर्या पर्यवेक्षक एवं शिक्षार्थियों द्वारा ही विचार–विमर्श कर पाठ्यचर्या तैयार की जाएगी। यह बॉटम–अप (नीचे से ऊपर की ओर) उपागम है। किसी भी पाठ्यचर्या के विकास की प्रक्रिया में लक्ष्यों/प्रयोजनों का चयन एवं नियत (पूर्व निर्धारित) सीखने के प्रतिफल शामिल होते हैं। हालाँकि, इन नियत सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के साधनों को स्पष्ट करना चाहिए अर्थात् योजना बनाना, विषयवस्तु का चयन एवं संगठन तथा विद्यालय के अंदर एवं बाहर के अधिगम अनुभव आदि। योजना की प्रक्रिया में प्रणालीगत (व्यवस्थागत) मामलों पर ध्यान देना ज़रूरी है, जो शिक्षकों को नई पाठ्यचर्या को क्रियान्वित करने में सक्षम बनाती है। पुस्तकालयों, संदर्भ पुस्तकों, विज्ञान के उपकरण, चार्ट, नक्शे, स्टेशनरी एवं अन्य उपकरणों जैसे सीखने के संसाधनों की योजना बनाने और विद्यालयों में उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में मार्गदर्शक सिद्धांत दिए गए हैं, जिनका पाठ्यचर्या की योजना बनाने तथा अधिगम अनुभवों के पालन करने की आवश्यकता है। ये मार्गदर्शी सिद्धांत हैं:–

- ज्ञान को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ना;
- पढ़ाई रटत प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित करना;
- पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन करना कि वह बच्चों को चहुँमुंखी विकास के अवसर प्रदान करवाए बजाए इसके कि वह पाठ्यपुस्तक केन्द्रित बन कर रह जाए;
- परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षाकक्ष की गतिविधियों से जोड़ना, और
- देश की लोकतांत्रिक राज्यव्यवस्था के अन्तर्गत अनुरक्षण सरोकारों द्वारा अवगत कराई गई अधिभावी पहचान का विकास करना।

इन मार्गदर्शक सिद्धांतों का परिप्रेक्ष्य, बच्चे एवं उसकी स्वतंत्रता पर ध्यान देने के साथ अधिगम विषयवस्तु तथा अधिगम गतिविधियों की योजना और संगठन को और बढ़ावा देता है।

3.3.2 पाठ्यचर्या योजना के सिद्धांत

पाठ्यचर्या सभी स्तरों पर संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रियाओं के लिए आधार बनाती है जैसे– बुनियादी (पूर्व–प्राथमिक एवं कक्षा 1 व 2), प्रारंभिक (कक्षा 3 से 5), पूर्व–माध्यमिक (मिडिल) (कक्षा 6 से 8), माध्यमिक (कक्षा 9 से 12)। गाँधी जी के अनुसार ''शिक्षा जीवन के लिए, जीवन के माध्यम से जीवन भर चलती रहती है।'' संपूर्ण विद्यालय की गतिविधियाँ पाठ्यचर्या द्वारा निर्धारित होती हैं। मौजूदा पाठ्यचर्या का विश्लेषण एवं शिक्षार्थियों की आवश्यकताओ का सर्वेक्षण नई पाठ्यचर्या की योजना बनाने का आधार होता है। पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय शिक्षा की दृष्टि (विज़न), मिशन, लक्ष्यों एवं उद्देश्यों, शिक्षण अधिगम रणनीतियों तथा आकलन प्रक्रियाओं पर विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है। विषयवस्तु का चयन एवं संगठन, अधिगम अनुभवों तथा उपयुक्त आकलन की प्रक्रियाओं का चयन महत्वपूर्ण पहलू हैं, जिन्हें पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय ध्यान रखने की आवश्यकता है। इन पहलुओं के अतिरिक्त, पाठ्यचर्या को प्रभावी बनाने के लिए पाठ्यचर्या नियोजकों को कुछ सिद्धांतों का पालन करने की आवश्यकता है। चित्र 3.1 में पाठ्यचर्या योजना के सिद्धांतों को दर्शाया गया है:–

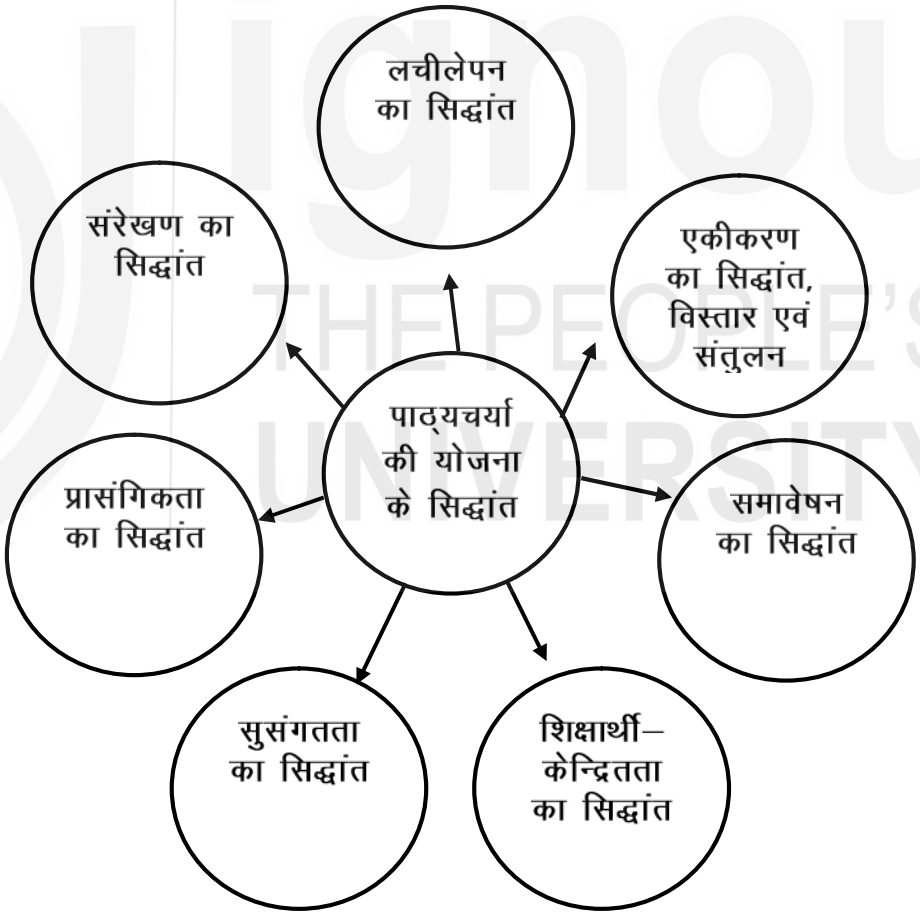

चित्र 3.1 : पाठ्यचर्या योजना के सिद्धांत

आइए, हम प्रत्येक सिद्धांत पर विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगें।

1. **लचीलेपन का सिद्धांत** :पाठ्यचर्या की योजना शैक्षिक संस्थान की विशेश आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए। यह सामाजिक एवं तकनीकी परिवर्तनों के लिए भी उत्तरदायी होना चाहिए और उस परिवर्तन की प्रक्रिया से उत्पन्न

शिक्षार्थियों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए। विशेश रूप से, अधिगम उपकरणों के रूप में नई तकनीकी के प्रभावी उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। जबकि शिक्षार्थियों को अपनी व्यक्तिगत पाठ्यचर्या, निश्चित विशयों, कौशलों तथा क्षमताओं के आधार पर चयन करने का व्यापक लचीलापन मिलना चाहिए, जिससे सभी विद्यार्थी आज के तेज़ी से बदलते विश्व में अच्छे, सफल, नवाचारी, अनुकूलनीय और उत्पादक मानव बनने हेतु सीख सकें (राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पृ०15)।

2. **एकीकरण का सिद्धांत, विस्तार एवं संतुलन** : पूर्व–प्राथमिक से उच्च (महाविद्यालयी एवं विश्वविद्यालयी) शिक्षा तक के प्रत्येक अधिगम स्तर पर संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा मनोगत्यामक पक्षों से जुड़े विशेश कौशलों एवं योग्यताओं के समूहों की पहचान कर एकीकरण करते हुए शामिल करना होगा। एक समग्र पाठ्यचर्या का उद्देश्य मानव में सभी योग्यताओं का विकास करना है, जिनमें बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, संवेगात्मक एवं नैतिक योग्यताओं को एकीकृत ढंग से विकसित करना है। इस प्रकार की पाठ्यचर्या 21वीं सदी के कौशलों के साथ शिक्षार्थियों के समग्र विकास को संतुलित करती हैं।

3. **समावेशन का सिद्धांत** : समावेशन का अर्थ, सभी समूहों के शिक्षार्थियों तक ज्ञान की विशाल श्रृंखला, कौशल एवं मूल्यों की बिना शैक्षिक व्यवस्थाओं पर ध्यान देते हुए, उपलब्धता सुनिश्चित करना है। संस्कृति, लिंग (जेंडर), दिव्यांगता, प्रजाति एवं वर्ग जैसी अवधारणाओं का निर्माण कैसे हुआ, का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षार्थियों को सीखने का अवसर भी प्रदान करना आवश्यक है।

4. **शिक्षार्थी–केन्द्रितता का सिद्धांतः** पाठ्यचर्या नियोजनकर्ताओं को अपने शिक्षार्थियों की आवश्यकताएँ, संदर्भ, क्षमताओं, अनुभवों एवं रूचियों का ध्यान रखना चाहिए। उन्हें शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत और पारस्परिक संबंधों, विश्वासों एवं धारणाओं का भी ध्यान रखना होगा, जो कि संपूर्ण शैक्षिक प्रणाली द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है।

5. **सुसंगतता का सिद्धांत** : शिक्षार्थियों के पूर्वज्ञान के आधार पर अधिगम कराया जाता है तो पाठ्यचर्या को सुसंगत कहा जा सकता है। शिक्षार्थी अपनी गति से एवं अलग–अलग तरीकों से सीखते हैं, वे अपने पूर्वज्ञान से जोड़ते हुए नए ज्ञान एवं समझ का निर्माण करते हैं। सीखने के सभी क्षेत्रों के बीच संबंध भी होना चाहिए।

6. **प्रासंगिकता का सिद्धांत** : पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय, शिक्षार्थियों की सामाजिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के संदर्भ में प्रासंगिकता निर्धारित करना आवश्यक है। जैसा कि डिजिटल युग में विभिन्न प्रभावों के कारण समाज बदल रहा है, अतः भविष्य के नागरिकों को अच्छी तरह से नियोजित पाठ्यचर्या के माध्यम से नई चुनौतियों और मुद्दों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। पाठ्यचर्या को प्रासंगिक बनाने के लिए उसकी निरंतर समीक्षा करना आवश्यक है।

7. **संरेखण का सिद्धांतः** संरेखण एक प्रक्रिया है, जो यह मूल्यांकन करती है कि एक कार्यक्रम या पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों एवं कार्यस्थल की बदलती ज़रूरतों को संबोधित करता है या नहीं। शिक्षक राज्य एवं राष्ट्रीय संगठनों द्वारा निर्धारित अधिगम के मानकों के साथ शिक्षण की प्रविधियों एवं विषयवस्तु को संरेखित करने का प्रयास कर सकते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

टिप्पणी : (अ) प्रत्येक प्रश्न के पश्चात् दिए गए रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

i) पाठ्यचर्या के सिद्धांत क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 पाठ्यचर्या योजना के उपागम

वेबस्टर शब्दकोश के अनुसार, उपागम किसी चीज़ या कोर्स से जुड़ने का तरीका है तथा किसी चीज़ के बारे में सोचने एवं करने का तरीका है। पाठ्यचर्या की योजना के कई उपागम या तरीके हैं। पाठ्यचर्या नियोजक को विभिन्न उपागमों को संदर्भित करने व उन्हें समझने की आवश्यकता है तथा पाठ्यचर्या के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त उपागम को योजना बनाते समय अपनाना होगा। अब हम कुछ उपागमों पर चर्चा करते हैं, जो मुख्यरूप से पाठ्यचर्या की योजना एवं डिज़ाइन बनाने में प्रयोग किए जाते हैं। विस्तृत रूप से यहाँ पर पाँच पाठ्यचर्यात्मक उपागम प्रस्तुत किए गए हैं, जो इस प्रकार हैं:–

i. व्यावहारिक उपागम

ii. प्रबंधकीय उपागम

iii. प्रणाली उपागम

iv. मानवीय उपागम

v. बौद्धिक/अकादमिक उपागम

3.4.1 व्यावहारिक उपागम

इस उपागम में लक्ष्य, उद्देश्य, अधिगम–गतिविधियां आदि पहले से अच्छी तरह निर्दिष्ट (निर्धारित) कर लिए जाते हैं और व्यवस्थित तरीके से क्रियान्वित करने के लिए एक खाका (ब्लू प्रिंट) विकसित किया जाता है। पूर्व निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों पर आधारित अधिगम परिणामों का मूल्यांकन किया जाता है। पाठ्यचर्या योजना आवश्यकताओं के विश्लेषण और लक्ष्यों, उद्देश्यों और अधिगम अनुभवों को बताते हुए प्रारम्भ होती है। शिक्षार्थियों के अपेक्षित व्यवहार में परिवर्तनों की उपलब्धि पाठ्यचर्या

की प्रभावशीलता को दर्शाती है। यह उपागम टाइलर एवं हिल्डा टाबा की विचारधारा को दर्शाता है। इस उपागम में उद्देश्यों, अकादमिक मानकों, सीखने के प्रतिफलों, प्रतिफल आधारित शिक्षा को प्रमुखता दी गई है। उदाहरण के लिए, शिक्षक शिक्षार्थियों के निष्पादन, उनकी सीखी हुई नई समझ, नई अभिवृत्तियों एवं सीखे गये नए कौशलों का शैक्षणिक सत्र के दौरान एवं अंत दोनों में आकलन करता है।

3.4.2 प्रबंधकीय उपागम

विद्यालय का प्रबंधक पाठ्यचर्या की योजना एवं क्रियान्वयन की दिशा निर्धारित करता है। विद्यालय/संस्थान के प्रबंधक द्वारा नीतियों, प्राथमिकताओं एवं अधिगम गतिविधियों के आयोजन का मार्गदर्शन एवं प्रबंधन किया जाता है। इस उपागम में, विद्यालय के प्राचार्य पाठ्यचर्या के विशेशज्ञ एवं नेतृत्वकर्ता के रूप में मुख्य भूमिका निभाते हैं। पाठ्यचर्या का निर्माण शिक्षार्थियों एवं समुदाय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षकों द्वारा अभिभावकों एवं अन्य शिक्षाविदों के सहयोग से किया जाता है। प्रारंभ में, यह समूह उसे जो शिक्षण एवं अधिगम गतिविधियाँ क्रियान्वित करना होता है, उनकी योजना के आधार पर पाठ्यचर्या के लक्ष्य एवं उद्देश्य विकसित करता है। इसमें विद्यालय कक्षा (ग्रेड) के अनुसार एवं विषयानुसार पाठ्यचर्या के दिशा–निर्देश विकसित करते हैं तथा ये दिशा–निर्देश पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु दिशा प्रदान करते हैं। प्रबंधक शिक्षण अधिगम गतिविधियों के पर्यवेक्षण पर ध्यान केन्द्रित करता है तथा शिक्षकों को सहायता प्रदान करता है। पाठ्यचर्या की आवश्यकताओं के आधार पर अधिगम सामग्री की व्यवस्था की जाती है। पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन का निरीक्षण (मॉनीटर) करने के लिए अकादमिक मानक विकसित किए जाते हैं।

यह उपागम मुख्य रूप से, नवाचार एवं बदलावों हेतु पाठ्यचर्या तथा प्रोत्साहन की सही दिशा में क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों की सहायता और पाठ्यचर्यात्मक गतिविधियों के पर्यवेक्षण एवं प्रशासन पर केन्द्रित है। उदाहरण के लिए, एक विद्यालय के प्राचार्य या अकादमिक समन्वयक के निर्देशन में विद्यालय द्वारा पाठ्यचर्यात्मक गतिविधियों की योजना एवं उनका आयोजन लचीले ढंग से किया जाता है। विद्यालय का प्राचार्य नियमित समीक्षा करते हुए पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन पर निगरानी रखता है।

3.4.3 प्रणाली उपागम

एक प्रणाली में कई भाग या घटक शामिल होते हैं, जो प्रणाली के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आपस में अंतर्क्रिया करते हैं। प्रणाली उपागम में, प्रणाली के भीतर के घटकों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है कि ये घटक एक–दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं और अपेक्षित लक्ष्यों तक पहुंचने के संदर्भ में इसके प्रभावी प्रतिफलों या परिणामों के लिए आपस में अंतर्क्रिया करते हैं। **जॉर्ज बिउचैम्प (1961)** द्वारा वर्णित एक शैक्षिक प्रणाली की उप–प्रणालियाँ निम्नलिखित हैः–

i. पाठ्यचर्या,

ii. अनुदेशन,

iii. परामर्श,

iv. प्रशासन, तथा

v. मूल्यांकन

इन उप–प्रणालियों को संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के संबंध में देखा जाता है। पाठ्यचर्या की योजना पाठ्यचर्या के घटकों पर केन्द्रित होती है जैसे लक्ष्य एवं उद्देश्य, अधिगम गतिविधियाँ एवं उनका आयोजन, क्रियान्वयन, मूल्यांकन के साथ–साथ पाठ्यचर्या की संरचना जैसे पाठ्यचर्यात्मक विशय, संसाधन, अनुदेशन योजना, आकलन आदि। इन घटकों में मज़बूत अंतर्सम्बन्ध होता है। फिर भी, पाठ्यचर्या की सफल डिज़ाइन एवं क्रियान्वयन के लिए मानव संसाधन, भौतिक संसाधन एवं वित्तीय संसाधनों के बीच अंतर्क्रिया होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3.4.4 मानवीय उपागम

यह उपागम प्रगतिशील दर्शन और बाल–केन्द्रित शिक्षणशास्त्र आंदोलनों से प्रभावित है। यह मुख्य रूप से बचपन की प्रकृति जैसे बच्चों की रूचियों, आवश्यकताओं, योग्यताओं एवं दक्षताओं पर केन्द्रित है। बच्चों की क्षमताएँ स्वतंत्र परिवेश एवं आज़ादी पर केन्द्रित हैं। इस प्रकार की पाठ्यचर्या में सम्पूर्ण संकेद्रण बालक के सम्पूर्ण विकास पर होता है। यह पाठ्यचर्या एवं उसका क्रियान्वयन शिक्षार्थी और अधिगम पर केन्द्रित होता है।

पाठ्यचर्या गतिविधियाँ बालकों के संदर्भ पर केन्द्रित हैं और उनके अनुभवों के आधार पर पाठ/विषय (थीम) विकसित किए जाते हैं। क्षेत्र–भ्रमण (फील्ड ट्रिप), प्रोजेक्ट (परियोजना) आदि शिक्षण–अधिगम गतिविधियाँ आयोजित करने की विधियाँ हैं। गतिविधि आधारित अधिगम गतिविधियों के माध्यम से शिक्षार्थियों को सहभागी बनाते हुए सक्रिय अधिगम उपागम पर केन्द्रित शिक्षण–शास्त्र होता है। यह उपागम मुख्य रूप से शिक्षार्थियों में समीक्षात्मक चिंतन, समस्या–समाधान एवं संप्रेशण योग्यताओं पर केन्द्रित है। इसमें पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में सामुदायिक भागीदारी पर ज़ोर दिया जाता है। यह पाठ्यचर्या बालक के सम्पूर्ण विकास में गणित एवं विज्ञान की गतिविधियों के साथ–साथ कला एवं शिल्प (क्राफ्ट), मानविकी, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा की गतिविधियाँ करने पर बल देती है। मानवीय उपागम शिक्षार्थियों में संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक विकास पर भी ज़ोर देता है।

3.4.5 बौद्धिक/अकादमिक उपागम

इस उपागम में तीन प्रमुख घटकों पर बल दिया गया है– जिनमें शिक्षार्थी, समाज एवं विशय या विषयवस्तु है। पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय शिक्षार्थियों की प्रकृति, उनकी रूचि, क्षमताएँ तथा आवश्यकताओं से जुड़े सैद्धांतिक ज्ञान पर ध्यान दिया जाता है। पाठ्यचर्या डिज़ाइन करते समय समाज की समकालीन आवश्यकताओं एवं उसकी आकांक्षाओं को भी शामिल किया जाता है। इस उपागम में अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धांतों तथा उनका विविध शिक्षण विधियों में योगदान पर विशेश बल दिया जाता है। इसमें तीनों घटकों शिक्षार्थी, समाज एवं विशय या विशय–वस्तु को पृथक हिस्सों में न देखते हुए संपूर्णता में देखा जाता है। नेल नोडिंग्स (2013) ने अपनी पुस्तक **"21वीं सदी में शिक्षा एवं लोकतंत्र (न्यूयॉर्क)"**, में बताया है कि 21वीं सदी की शिक्षा में मानव जीवन के तीन घटकों जैसे घर एवं व्यक्तिगत जीवन, व्यावसायिक जीवन तथा नागरिक जीवन का एकीकरण करना होगा।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

टिप्पणी : (अ) प्रत्येक प्रश्न के पश्चात् दिए गए रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

i) पाठ्यचर्या की योजना बनाने में व्यावहारिक उपागम मानवीय उपागम से कैसे भिन्न होता है?

.....

.....

.....

.....

3.5 पाठ्यचर्या डिज़ाइन के आयाम

पूर्व अनुभाग में, हमनें पाठ्यचर्या की अवधारणा एवं उसकी योजना के तरीकों और विधियों पर चर्चा की। अब हम पाठ्यचर्या डिज़ाइन के विस्तृत आयामों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

पाठ्यचर्या अपने लक्ष्यों, विषयवस्तु, अधिगम क्षेत्रों एवं गतिविधियों के संगठन, पाठ्यचर्या संव्यवहार की रणनीतियों तथा शिक्षार्थियों की आंकलन प्रक्रियाओं के संदर्भ में शैक्षिक प्रक्रियाओं को दिशा देती है। इसलिए, पाठ्यचर्या के सभी आयामों को विभिन्न स्तरों पर पाठ्यचर्या डिज़ाइन करते समय विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है। पाठ्यचर्या के निम्नलिखित विभिन्न आयामों को एक प्रभावी पाठ्यचर्या की डिज़ाइन करने में ध्यान देने एवं विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है।

- पाठ्यचर्या के लक्ष्य एवं उद्देश्य
- प्रत्येक अधिगम क्षेत्र के लिए पाठ्य–विवरण
- पाठ्यचर्यात्मक मानक एवं अधिगम प्रतिफल
- पाठ्यपुस्तकें
- शिक्षणशास्त्र– विशय आधारित उपागम एवं शिक्षण अधिगम विधियाँ
- अधिगम संसाधन
- तकनीकी एवं मीडियाा ई–अधिगम
- आकलन
- प्रणालीगत या व्यवस्थागत सुधार
- सामुदायिक भागीदारी
- संदर्भ–स्थानीय एवं वैश्विक आयाम

इसके अतिरिक्त, विभिन्न अधिगम क्षेत्रों में विशयवस्तु के संगठन में नीचे दिए गए मूल आधारों पर अवश्य चिंतन करना चाहिए–

- विस्तार (स्कोप)
- क्रमबद्धता

- निरन्तरता
- एकीकरण
- संतुलन
- **विस्तार** : यह सभी कक्षाओं के प्रत्येक विशय क्षेत्रों में चर्चा की गई अवधारणाओं की गहनता एवं विस्तार से सम्बन्धित है। विस्तार का संबंध ग्रेड/कक्षावार इकाइयों, प्रकरणों एवं विशयों (थीम) को शामिल करने से है। गहनता का तात्पर्य प्रत्येक अवधारणा की किस सीमा तक चर्चा की जा रही है अर्थात् प्रत्येक कक्षा में अवधारणा की गहनता से है।
- **क्रमबद्धता** : विषयवस्तु को सरल से जटिल रूप में क्रमबद्धतापूर्वक संरचित या प्रस्तुत करना चाहिए। पाठ्यचर्या की डिज़ाइन में आवश्यकताओं पर ध्यान देने से पहले पूर्व की विषयवस्तु एवं विषय की प्रकृति तथा संदर्भ पर ध्यान देना ज़रूरी है। विषयवस्तु की योजना एवं डिज़ाइन बनाते समय विषयवस्तु की इकाइयों के बीच अंतर्संबंधों पर ध्यान देना चाहिए।
- **निरंतरता** : प्रकरणों एवं अवधारणाओं को उर्ध्वाधर (लम्बवत्) एवं क्षैतिज रूप से व्यवस्थित या संरचित करना जैसे –सामयिक उपागम या घुमावदार उपागम पर चर्चा करने की आवश्यकता है।
- **एकीकरण** : यह विषयवस्तुओं में और सभी पाठ्यचर्यात्मक विषयों में अंतर्संबंधों को बताता है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र का अध्ययन विषय (अनुशासन) है, जिसमें स्वास्थ्य देखभाल को एक प्रकरण के रूप में शामिल किया गया है।
- **संतुलन** : पाठ्यचर्यात्मक क्षेत्रों, अधिगम अनुभवों एवं उपलब्ध समय के बीच संतुलन सुनिश्चित करना आवश्यक है। साथ ही, पाठ्यक्रम की योजना बनाते समय संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक (गत्यात्मक) अर्थात् तीनों पक्षों में संतुलन पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, विषयवस्तु के बोझ से बचने की ज़रूरत है।

गतिविधि–1

माध्यमिक स्तर के किसी भी विशय का चयन करें तथा उस विषय की विषयवस्तु के संगठन या प्रस्तुतीकरण का औचित्य या आधार ज्ञात करें।

3.6 विभिन्न स्तरों पर पाठ्यचर्या

विभिन्न स्तरों में पाठ्यचर्या की चर्चा में प्रवेश करने से पूर्व, हमें कुछ प्रासंगिक प्रश्न पूछना होगा–

- पूर्व–प्राथमिक से उच्च शिक्षा (महाविद्यालयी एवं विश्वविद्यालयी शिक्षा) तक की पाठ्यचर्या में भिन्नता क्यों है?
- विभिन्न स्तरों पर पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय किन घटकों पर विचार किया जाना चाहिए?

पाठ्यचर्या पूर्व–प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा तक भिन्न होती है। यह विकास के स्तरों, शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं तथा विषयवस्तु की प्रकृति पर निर्भर करता है। निम्नलिखित विभिन्न स्तर हैं, जिनके लिए पाठ्यचर्या को शिक्षार्थियों की प्रकृति एवं विषय की प्रकृति के आधार पर डिज़ाइन करने की आवश्यकता होती है।

3.6.1 पूर्व–प्राथमिक

इस स्तर पर, बच्चे, खेल, प्रकृति के अवलोकन, कहानियाँ सुनकर, कला, शिल्प (क्राफ्ट), नृत्य, संगीत आदि से सीखते हैं। बच्चे बहुत सक्रिय होकर अपने स्थानीय परिवेश में सबकुछ खोजते रहते हैं। इस स्तर पर अधिगम क्षेत्रों में प्रारंभिक भाशा एवं प्रारंभिक गणित के कौशल, खेल, कहानियाँ, शब्दों के खेल, कला एवं शिल्प कार्य हैं। यह अवधि बच्चों के मस्तिष्क के विकास एवं उनकी क्षमताओं को पहचानने के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक कौशलों से जुड़ी गतिविधियों की सावधानीपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता है। कक्षा का अरूचिकर एवं नीरस परिवेश, गृहकार्य, आकलन परीक्षण आदि से बच्चों में तनाव और निष्क्रियता पैदा होती है और अधिगम के लिए उनकी अभिप्रेरणा घटती है। बच्चे नियमित कक्षागत शिक्षण से खोजने एवं अभिव्यक्त करने की स्वाभाविक जिज्ञासा खो देते हैं। पाठ्यचर्या में बच्चों को स्थानीय परिवेश में खोजने तथा सक्रिय होकर अंतर्क्रिया करने लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। चित्रकारी, रंग भरना, दृश्य कला जैसी रचनात्मक गतिविधियाँ इस स्तर की पाठ्यचर्यात्मक गतिविधियों का हिस्सा बनना चाहिए। बच्चों का शारीरिक एवं सामाजिक संदर्भ तथा प्राकृतिक परिवेश पाठ्यचर्या के केन्द्र में होना चाहिए।

3.6.2 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक (प्रारंभिक)

इस स्तर पर पाठ्यचर्या सामान्यतः साक्षरता कौशलों जैसे पढ़ने, लिखने, पढ़ने की समझ तथा बच्चों को स्वतंत्र पाठक के रूप में तैयार करने पर केन्द्रित है। इस पाठ्यचर्या में अधिगम की प्रक्रिया व सीखने के प्रतिफलों पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। बुनियादी अंकगणित जैसे संख्या अवधारणा, आकार, स्थानिक समझ, पैटर्न, माप आदि पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। कक्षागत शिक्षण का शिक्षणशास्त्र (पढ़ाने की विधियाँ) करके सीखने, अन्वेषण (खोज) और अनुभव द्वारा सीखने पर आधारित होना चाहिए। काम या कार्य के द्वारा शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। कक्षा 1 से कक्षा 8 तक अधिगम के मूर्त से अमूर्त रूप को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। बच्चे स्थान और समय, माप, रेखागणित, बीजगणित आदि पर अपने ज्ञान को संगठित करते हैं तथा अपने ज्ञान का स्थानीय संदर्भों में सामान्यीकरण करने का प्रयास भी करते हैं। प्रारंभिक स्तर संज्ञानात्मक कौशलों के विकास का आधार है, जिसका विकास समीक्षात्मक सोच, समस्या–समाधान, विश्लेषण, तार्किकता, कल्पनाशक्ति आदि को बढ़ावा देने से होता है। शिक्षा का प्रारंभिक स्तर संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक या गत्यात्मक क्षमताओं के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें भाषा और अभिव्यक्ति पर विशेश ध्यान देना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता या गणना की शिक्षा है। पर्यावरण की देखभाल एवं सुरक्षा के लिए बच्चों को संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है।

3.6.3 माध्यमिक

इस स्तर पर शिक्षार्थी किशोर (किशोरावस्था वाले) होते हैं। वे अधिक ऊर्जावान होते हैं और अपने नज़दीकी भौतिक एवं सामाजिक वातावरण का अन्वेषण करते हैं। पाठ्यचर्या विभिन्न विषयों एवं उनकी संरचनाओं पर केन्द्रित होती है। पाठ्यचर्या में अवधारणाओं की व्यापकता एवं गहनता पर बल दिया जाता है। शिक्षार्थी इन अवधारणाओं को अपने दैनिक जीवन में लागू करते हैं और पाठ्यचर्या का अर्थ गढ़ते हैं। इस स्तर पर, 21वीं सदी के कौशलों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जैसे समीक्षात्मक सोच, समस्या–समाधान, विश्लेषण, तार्किकता, कल्पनाशीलता, सहयोगात्मक कार्य, डिजिटल साक्षरता एवं अवधारणाओं का जीवन में प्रयोग आदि। आकलन 21वीं सदी के कौशलों एवं भावनात्मक पक्षों के गुणों जैसे अभिवृत्ति, रूचि आदि के विकास पर ज़ोर देता है। चूँकि किशोरावस्था तार्किकता एवं तार्किक सोच की अवस्था है, इसलिए इन मानसिक क्षमताओं को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त शिक्षणशास्त्र का उपयोग करना चाहिए।

3.6.4 उच्चतर माध्यमिक

उच्चतर माध्यमिक वह स्तर है, जहाँ चयनित विशयों की व्यापकता एवं गहनता पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। पाठ्यचर्या का उद्देश्य अवधारणाओं की गहन समझ एवं विशयों की समझ बनाना है। यह चरण पेशेवर और उदार (स्वतंत्र) कला पाठ्यक्रमों की बुनियाद है। पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाने और शिक्षणशास्त्रीय रणनीतियों की संरचना का ध्यान रखना आवश्यक है। पाठ्यपुस्तकों की योजना बनाने में शिक्षार्थियों की अभिव्यक्ति एवं विचार के विकास का सावधानीपूर्वक ध्यान रखने की ज़रूरत है। अवधारणाओं को परीक्षाओं में संस्मरण (याद करने), प्रतिधारण एवं पुनरुत्पादन करने की बजाय उनके विश्लेषण एवं प्रयोग पर बल दिया जाता है। गहन अधिगम को प्रश्न, तर्क एवं अन्य वैज्ञानिक विधियों के माध्यम से बढ़ावा देने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार पाठ्यपुस्तकों को स्वयं आगे की खोज (जाँच) के लिए रास्ते खोलने के रूप में देखा जाना चाहिए तथा शिक्षार्थियों को पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस स्तर पर समकालीन मुद्दों जैसे सतत् विकास के लक्ष्यों, मूल्यों, नैतिक अच्छाई, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदि पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

3.6.5 उच्च शिक्षा (महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय)

विश्वविद्यालय स्तर पर विद्याशाखा (विशय) सम्बन्धी विशेषीकरण पर संकेन्द्रण किया जाता है। इस स्तर पर विद्याशाखा सम्बन्धी विषयवस्तु के क्षेत्रों और उनके प्रयोगों पर गहन अध्ययन किया जाता है। विशेषज्ञता से तात्पर्य उदार (स्वतंत्र) कला के पाठ्यक्रम, विज्ञान के पाठ्यक्रम, पेशेवर पाठ्यक्रम जैसे– अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग), चिकित्सा (मेडिकल), भेशजीय (फार्मासिटीकल), वाणिज्य (कॉमर्स) एवं लेखाशास्त्र (एकाउन्टेंसी) आदि हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षार्थियों में विभिन्न विषय क्षेत्रों में खोज (अन्वेषण) की भावना विकसित होती है। मौलिक विषयों एवं उनके व्यावहारिक (एप्लाइड) क्षेत्रों में विद्याशाखा विषयक अध्ययन इस स्तर पर पढ़ाए जाते हैं।

आइए देखें कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में विभिन्न स्तरों की पाठ्यचर्या के लिए क्या अनुशंसाएँ की गई हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में नई डिज़ाइन 5+3+3+4 में विद्यालयी पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र के पुनर्गठन की संस्तुति की है। इस नीति में, वर्तमान विद्यालयी पाठ्यचर्या को शिक्षार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं और अधिक प्रासंगिक बनाते हुए शिक्षार्थियों के विभिन्न आयु समूहों जैसे 3 से 8 वर्श, 8 से 11 वर्श, 11 से 14 वर्ष और 14 से 18 वर्ष तथा बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार पुनर्गठन की संस्तुति की गई है। ये पाठ्यचर्यात्मक स्तर बालक के संज्ञानात्मक विकास के पहलुओं से घनिष्ठता से जुड़े हैं। विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा प्रस्तावित डिज़ाइन 5+3+3+4 द्वारा मार्गदर्शित की जाएगी। नई डिज़ाइन में उसें 3 से 8 वर्श आयु समूह के लिए 5 वर्ष का फाउण्डेशनल स्तर (बुनियादी स्तर) दिया गया है, जिसमें 3 वर्श की पूर्व–प्राथमिक (विद्यालय)/आँगनवाड़ी तथा 2 वर्ष की कक्षा 1 व 2 की प्राथमिक शिक्षा शामिल है और 8 से 11 वर्ष आयु समूह के लिए कक्षा 3 से 5 तक प्रारंभिक (प्रिपेटरी) स्तर (तैयारी स्तर), 11 से 14 वर्ष आयु समूह के लिए कक्षा 6 से 8 तक पूर्व–माध्यमिक (मिडिल) स्तर तथा 14 से 18 वर्ष आयु समूह में 9 से 12 तक कक्षाएँ दी गई है, जिसमें प्रथम चरण कक्षा 9 व 10 एवं द्वितीय चरण कक्षा 11 व 12 तक दिया गया है, जो माध्यमिक स्तर कहलाता है। विशेष रूप से, विद्यार्थियों को कक्षा 10 के बाद निकास (एक्सिट) का विकल्प होगा तथा दूसरे चरण में किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम या कक्षा 11 व 12 में उपलब्ध किसी भी अन्य पाठ्यक्रम में पुनः प्रवेश ले सकेंगें, यदि कोई अधिक विशिष्ट विद्यालय उपलब्ध हो तो उसमें भी प्रवेश लेने का विकल्प होगा।

स्नातक डिग्री या तो 3 या 4 साल की अवधि की होगी, जिसमें निकास के कई विकल्प होंगें, जिसमें उपयुक्त प्रमाणपत्र दिए जाएगें जैसे– किसी एक विद्याशाखा (विषय) में या व्यावसायिक एवं पेशेवर क्षेत्र में 1 वर्श सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर प्रमाणपत्र, या 2 वर्श के अध्ययन के बाद डिप्लोमा, या 3 वर्ष के कार्यक्रम के बाद स्नातक डिग्री दी जाएगी। 4 वर्षीय बहु–विषयक स्नातक कार्यक्रम शिक्षार्थियों का पसंदीदा विकल्प होगा, क्योंकि शिक्षार्थी की पसंद के अनुसार चुने हुए प्रमुख (मेजर) एवं अन्य छोटे (मायनर) विषयों पर ध्यान केन्द्रित करने के अलावा समग्र एवं बहु–विषयक शिक्षा की पूरी श्रृंखला का अनुभव प्रदान करने का अवसर देगा। एक अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ए.बी.सी.) की स्थापना की जाएगी, जो विभिन्न मान्यता प्राप्त उच्च शिक्षा संस्थानों (एच ई आई) से अर्जित अकादमिक क्रेडिट को डिजिटल रूप में संगृहीत करेगा, ताकि शिक्षार्थी द्वारा अर्जित क्रेडिट के आधार पर उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा डिग्री प्रदान की जा सके। यदि शिक्षार्थी उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा निर्धारित प्रमुख अध्ययन क्षेत्रों में गहन शोध परियोजना को पूरा करता है, तो 4 वर्ष का कार्यक्रम 'शोध के साथ' हो सकता है।

स्रोतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

टिप्पणी : (अ) प्रत्येक प्रश्न के पश्चात् दिए गए रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

i) शिक्षार्थियों की प्रकृति एवं अथवा उनकी विकास की अवस्थाओं के आधार पर पूर्व–प्राथमिक तथा प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 पाठ्यचर्या विकास के सोपान

अभी तक हमनें पाठ्यचर्या की योजना एवं डिज़ाइन बनाने तथा शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यचर्या में कैसे भिन्नता होती है, को समझते हुए चर्चा की। इस पृष्ठभूमि के साथ, आइए अब हम पाठ्यचर्या विकास के चरणों पर चर्चा करें।

हिल्डा टाबा द्वारा पाठ्यचर्या विकास के लिए प्रमुख सात चरणों में एक रेखीय मॉडल (प्रतिमान) प्रस्तुत किया गया। जो इस प्रकार है–

i. शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं का निदान
ii. अधिगम उद्देश्यों का निर्धारण या निर्माण
iii. अधिगम विषयवस्तु का चयन
iv. अधिगम विषयवस्तु का संगठन
v. अधिगम अनुभवों का चयन
vi. अधिगम गतिविधियों का संगठन
vii. मूल्यांकन

पाठ्यचर्या विकास एक व्यापक प्रक्रिया या कार्य है तथा इसे वैज्ञानिक तरीके से योजनाबद्ध करना चाहिए। इसमें नीचे चर्चा किए गए चरणों को शामिल किया गया है।

i. पाठ्यचर्या विकास समिति का गठन : विभिन्न हितधारकों के प्रतिनिधियों जैसे– शिक्षकों, पाठ्यविशयी के विशेशज्ञों, विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, शिक्षक–प्रशिक्षकों, शैक्षिक पर्यवेक्षकों, विद्यालय प्रमुखों तथा विद्यार्थियों को शामिल करते हुए समिति गठित करने की आवश्यकता है।

ii. लक्षित शिक्षार्थियों का निर्धारण : कौन–से स्तरों के लिए पाठ्यचर्या विकसित की जाएगी, यह पाठ्यचर्या की योजना बनाने से पहले निर्णय लेना चाहिए। यहाँ स्तरों से तात्पर्य पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, उच्च (महाविद्यालयी एवं विश्वविद्यालयी) शिक्षा आदि से है।

iii. आवश्यकता विश्लेषण : समय एवं स्थान के अनुसार समाज एवं व्यक्ति की आवश्यकतओं एवं आकांक्षाओं में बदलाव आ रहा है। वैश्वीकरण दुनियाभर में समुदाय के जीवन एवं संस्कृति की प्रकृति को अधिक प्रभावित करता है। वैश्विक बाज़ार में कार्यबल की माँगें बदल रही हैं। पर्यावरणीय मुद्दों में भी बदलाव आ रहा है तथा यह समय पर्यावरण क्षरण पर ध्यान केन्द्रित करने का है। इसलिए,

मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समय–समय पर पाठ्यचर्या में संशोधन की ज़रूरत होती है। मौजूदा पाठ्यचर्या में क्या रिक्तता है। और कौन–से नए बदलाव हैं। यह समझने के लिए विश्लेषण की आवश्यकता होती है, जैसा कि शिक्षकों, विद्यार्थियों, शैक्षिक पर्यवेक्षकों, पाठ्यचर्या विशेशज्ञों, शिक्षक–प्रशिक्षकों, अभिभावकों आदि जैसे विभिन्न हितधारकों द्वारा माना गया है, को नई पाठ्यचर्या में शामिल करने की आवश्यकता है।

iv. **पाठ्यविषयी लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का विकास** : जिस उद्देश्य के लिए पाठ्यचर्या क्रियान्वित करने जा रहे है, उस पर चर्चा एवं विचार–विमर्श करने की आवश्यकता है। इसलिए, लक्ष्य एवं उद्देश्य तैयार करना होगा।

v. **पाठ्यविषयी मानकों का विकास** : सभी तीनों पक्षों अर्थात् संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक पक्षों पर आधारित कक्षावार प्रत्येक अधिगम क्षेत्रों में पाठ्यचर्या के मानक विकसित करने की आवश्यकता है।

vi. **अधिगम क्षेत्रों का चयन** : उपयुक्त आयु के अनुसार विभिन्न विशयों जैसे भाषा, मानविकी, कला एवं शिल्प आदि में अधिगम के क्षेत्रों का निर्धारण करने की आवश्यकता है।

vii. **अधिगम अनुभवों का संगठन** : पाठ्यविवरण एवं पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में उपयुक्त विधियों एवं रणनीतियों के माध्यम से अधिगम के अनुभवों का संगठन शामिल है, ताकि सीखने के प्रतिफलों एवं अधिगम की उपलब्धि सुनिश्चित हो सके।

viii. **अधिगम संसाधनों की पहचान** : पाठ्यचर्या को प्रभावी रूप से संव्यवहृत (हस्तांतरित करने) के लिए उपयुक्त अधिगम के संसाधनों को पहचानने और प्रदान करने की आवश्यकता है। इन अधिगम के संसाधनों से शिक्षण एवं अधिगम दोनों में सुधार होता है।

ix. **अनुदेशन रणनीतियों की पहचान** : पाठ्यचर्या के मानकों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की प्रकृति एवं विकास की अवस्थाओं तथा विशय की प्रकृति के आधार पर पाठ्यचर्या को पढ़ाने के लिए उपयुक्त शिक्षणशास्त्र की पहचान करने की आवश्यकता है।

x. **मूल्यांकन एवं आकलन प्रक्रियाएं** : आकलन का मुख्य उद्देश्य अधिगम में सुधार लाना है। ''अधिगम के लिए आकलन'' एवं ''अधिगम के रूप में आकलन'' पर ज़ोर देने की आवश्यकता है। प्रारंभिक एवं माध्यमिक स्तर पर रचनात्मक (फॉरमेटिव) आकलन (एफ ए) पर अधिक बल दिया जा सकता है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) में रचनात्मक आकलन द्वारा सभी कक्षाओं में प्रभावी फीडबैक (प्रतिपुष्टि) देने के लिए तथा शिक्षण एवं अधिगम में सुधार के लिए ध्यान देना चाहिए। रचनात्मक आकलन का प्रयोजन अधिगम रिक्तता को समझना तथा शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों को उनमें सुधार के लिए फीडबैक (प्रतिपुष्टि) प्रदान करना है।

xi. **व्यवस्थागत या प्रणालीगत सुधार** : व्यवस्थागत सुधार का तात्पर्य कार्यात्मक पहलुओं एवं पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के लिए विद्यालयों/संस्थानों के प्रभावी संचालन या शासन प्रणाली से है ताकि अपेक्षित सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि को सुनिश्चित करने पर चर्चा की जाए तथा पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन की

सुविधाओं पर विचार–विमर्श किया जाए। विद्यालय निरीक्षण तथा शिक्षकों की सहायता से जुड़े तंत्र पर संकेन्द्रण की आवश्यकता है।

xii. पाठ्यचर्या क्रियान्वयन एवं इसका मूल्यांकन : पाठ्यचर्या विकसित होने के बाद, उसके क्रियान्वयन एवं पर्यवेक्षण पर संकेन्द्रण करना होगा। नई पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता ज्ञात करने के लिए उसे फील्ड (क्षेत्र) में क्रियान्वित करने के बाद एक बार मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 4

टिप्पणी : (अ)प्रत्येक प्रश्न के पश्चात् दिए गए रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखें।

(ब)इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों की तुलना करें।

i) आप यह क्यों सोचते हैं कि पाठ्यचर्या तैयार करते समय आवश्यकता विश्लेषण एक महत्वपूर्ण सोपान है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.8 सारांश

इस इकाई में, हमने पाठ्यचर्या की अवधारणा और इसकी योजना एवं डिज़ाइन पर चर्चा की है। पाठ्यचर्या एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है, जो गतिविधियों की प्रकृति को दर्शाता है, जो एक विद्यालय/संस्थान अपने शिक्षार्थियों के समग्र विकास (को प्राप्त करने) के लिए आयोजित करता है। किसी भी पाठ्यचर्या के विकास की प्रक्रिया में लक्ष्यों/उद्देश्यों का चयन तथा सुनिश्चित सीखने के प्रतिफल शामिल हैं। यद्यपि, इन सुनिश्चित या भावी प्रतिफलों को प्राप्त करने के साधन निर्दिष्ट (निर्धारित) किए जाने चाहिए। पाठ्यचर्या सभी स्तरों अर्थात् पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा पर संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रियाओं के लिए आधार बनाती है। शिक्षा जीवन के लिए, जीवन द्वारा तथा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। संपूर्ण विद्यालयी गतिविधियाँ पाठ्यचर्या द्वारा मार्गदर्शित होती हैं। पाठ्यचर्या की रूपरेखा एक नियोजित दस्तावेज़ है जो विभिन्न अधिगम क्षेत्रों के नियोजन एवं संगठन के साथ–साथ शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की रचना और व्याख्या करता है, तथा आकलन की प्रक्रियाओं एवं व्यवस्थागत या प्रणालीगत मुद्दों पर चर्चा करता है। इस इकाई में, पाठ्यचर्या के विभिन्न उपागमों एवं पाठ्यचर्या निर्माण के सोपानों पर भी चर्चा की गई है।

3.9 इकाई अन्त अभ्यास

- प्राथमिक स्तर पर आप किस प्रकार के पाठ्यचर्या उपागम का सुझाव देते हैं? अपने उत्तर की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के दस्तावेज़ का विश्लेषण करते हुए उस पर फोकस किये गये उसके प्रमुख घटकों पर टिप्पणी कीजिए तथा उनकी सार्थकता बताइए।
- पूर्व–प्राथमिक स्तर पर किस प्रकार की पाठ्यचर्या क्रियाकलापों की प्रकृति का सुझाव दिया जाना चाहिए?
- किसी एक विषय का चयन करते हुए, उस विषय की कक्षा 1 से 5 या कक्षा 6 से 10 की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करें तथा उस विषय क्षेत्र में विस्तार (स्कोप), क्रमबद्धता, एकीकरण एवं संतुलन पर टिप्पणी करें।

3.10 संदर्भग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

- विगिन्स, जी. (2005). अंडरस्टैडिंग बॉय डिज़ाइन. अलेक्जेंड्रिया, वी ए : एसोसिएशन फॉर सुपरविज़न ऐंड करिकुलम डेवलपमेंट ए एस सी डी.
- श्मिट, डब्ल्यू.एच. (2005). करिकुलम कोहेरेन्सः ऐन एक्ज़ामिनेशन ऑफ यू.एस. मैथेमैटिक्स ऐंड साइंस कन्टेन्ट स्टैंडर्ड्स फ्रॉम ऐन इंटरनेशनल परसपेक्टिव. जर्नल ऑफ करिकुलम स्टडीज, 35(5), 528–529.
- अरोड़ा, जी.एल. (1984). रिफ्लेक्शन्स ऑन करिकुलम, न्यू दिल्लीःएन.सी.ई.आर.टी.
- बीउचेम्प, जी.ए. (1961). करिकुलम थ्योरीः मीनिंग, डेवलपमेंट ऐंड यूज. विल्मेट, II : द काग प्रेस.
- डीवी, जॉन (1966). द चाइल्ड ऐंड द करिकुलम. शिकागो : द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.
- गवर्नमेंट ऑफ इंडिया. (2020). नेशनल एजूकेशन पॉलिसी–2020. रिट्रीव्ड फ्रॉम https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_Op
- टायलर, राल्फ, डब्ल्यू. (1974). बेसिक प्रिसिंपल्स ऑफ करिकुलम ऐंड इन्सट्रक्शन. शिकागो : द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.
- नेशनल कॉउन्सिल फॉर टीचर एजूकेशन (2009). नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजूकेशन टूवर्ड्स प्रिपेयरिंग प्रोफेशनल ऐंड ह्यूमेन टीचर. रिट्रीव्ड फ्रॉम : https://ncte.gov.in/website/PDF/NC.
- एनसीईआरटी. (2005). नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (एनसीएफ) 2005. न्यू दिल्लीः नेशनल कॉउन्सिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च ऐंड ट्रेनिंग.
- नेल नोडिंग्स (2013). एजूकेशन ऐंड डेमोक्रेसी इन द 21st सेन्चुरी. न्यूयार्कः टीचर्स कॉलेज प्रेस.
- टाबा, एच. (1962) करीकुलम डेवलपमेंट. थियरी ऐंड प्रैक्टिस. न्यूयार्कः हरकोर्ट, ब्रेस ऐन्ड वर्ल्ड.
- स्टेट कॉउन्सिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च ऐंड ट्रेनिंग, तेलंगाना (2011). स्टेट करिकुलम फ्रेमवर्क–2011 रिट्रीव्ड फ्रॉम :

https://scert.Telangana.gov.in/DisplayImage.aspx?enery=tXmGys30tHST1+cNHAso+A.

- टायलर, राल्फ डब्ल्यू (1949). बेसिक प्रिंसिपल्स ऑफ करिकुलम ऐंड इन्सट्रक्शन. शिकागो यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

3.11 आप की प्रगति जाँच के उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच करें–1

i. लचीलेपन का सिद्धांत, एकीकरण का सिद्धांत, विस्तार या व्यापकता एवं संतुलन, समावेशन का सिद्धांत, शिक्षार्थी–केन्द्रिता का सिद्धांत, सुसंगतता का सिद्धांत, प्रासंगिकता का सिद्धांत तथा संरेखण का सिद्धांत।

अपनी प्रगति की जाँच करें–2

i. व्यवहारिक उपागम में पूर्व–निर्धारित सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि पर बल दिया जाता है। लक्ष्य, उद्देश्य एवं अधिगम गतिविधियाँ पहले से ही निर्दिष्ट या निर्धारित कर ली जाती है। अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन की उपलब्धि पाठ्यचर्या के सफल क्रियान्वयन का संकेत है। जबकि मानवीय उपागम में, पाठ्यचर्या संपूर्ण बालक के विकास पर केन्द्रित है। इसमें शिक्षार्थी की प्रकृति तथा स्वतंत्रता एवं प्रोत्साहन के परिवेश में अधिगम की प्रकृति पर ध्यान दिया जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें–3

i. पूर्व–प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या पूर्व–भाशा एवं पूर्व–गणित कौशलों के विकास पर केन्द्रित है, यह स्तर विद्यालय तत्परता (रेडीनेस) की तैयारी का है। इसमें खेल, कहानियाँ, शब्दखेल (वर्डगेम्स), कला एवं शिल्प कार्य आदि से अधिगम कराया जाता है। बच्चों में अवलोकन एवं अभिव्यक्ति हेतु प्राकृतिक जिज्ञासा का पोशण तथा प्राकृतिक परिवेश की खोज पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या पढ़ने, लिखने एवं अंकगणित के बुनियादी कौशलों पर केंद्रित है। कक्षागत शिक्षणशास्त्र करके सीखने, खोज एवं सहयोगात्मक अधिगम को दर्शाता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें–4

i. मौजूदा पाठ्यचर्या के प्रयोजन, अधिगम क्षेत्रों के चयन एवं संगठन और आकलन प्रक्रिया अंतरालों का विश्लेषण बहुत आवश्यक होता है, ताकि नई पाठ्यचर्या की डिज़ाइन करते समय बच्चों को जीवन में भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित किए जायें।